शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2013

पालि काव्य साहित्य में सासनवंसदीपः एक साहित्यिक अध्ययन

डा. ज्ञानादित्य शाक्य
सहायक प्रोफेसर
स्कूल आफ बुद्धिस्ट स्टडीज एण्ड सिविलाईजेशन
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा
गौतम बुद्ध नगर-201312, उत्तर प्रदेश (भारत)

शोध संक्षेप

यह सर्वविदित है कि विश्वगुरू शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने सम्पूर्ण लोक के हित व सुख के लिए सत्य धर्म की देशना की, जो कालान्तर में बौद्ध धर्म के नाम से जाना गया। सम्बोधि-प्राप्ति के बाद उन्होंने अनुलोम-प्रतिलोम के रूप में प्रतीत्य-समुत्पाद चिन्तन किया। तदनन्तर उन्होंने सारनाथ में पंचवर्गीय ब्राह्मणों को धम्मचक्कपवत्तनसुत्त की देशना देकर अपने सद्धर्म की नींव रखी। सम्बोधि-प्राप्ति के बाद पैंतालीस वर्षों तक शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा भाषित व अनुमोदित वचनों का संग्रह ही बुद्धवचन या बुद्धवाणी कहलाया है। आचार्य भदन्त विमलसार-तिस्स थेर द्वारा विरचित सासनवंसदीप नामक ग्रन्थ पालि काव्य-साहित्य की एक श्रेष्ठ काव्य-कृति है। यह ग्रन्थ सारगर्भित विषयवस्तु से परिपूर्ण धार्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक व साहित्यिक दृष्टि से एक उत्कृष्ट पालि काव्य-ग्रन्थ है, जिसकी रचना उन्नीसवीं शताब्दी में की गयी है। कालान्तर में बुद्धवचन के संग्रह को ही पालि तिपिटक साहित्य के रूप में जाना गया, जो मागधी (पालि) भाषा में संगृहीत है।

प्रस्तावना

मागधी-भाषा को सम्यक् सम्बुद्ध द्वारा प्रयुक्त भाषा के रूप में बतलाते हुए साधुविलासिनी नामक ग्रन्थ में कहा गया है कि -

सा मागधी मूलभासा, नरा याया' दिकप्पिका।
ब्रह्मानो चस्सुतलापा, सम्बुद्धा चापि भासरे।।1

अर्थात् सभी बुद्ध मागधी भाषा में उपदेश देते हैं। यही भाषा मूलभाषा और ब्रह्मभाषा से लेकर नारकीय प्राणियों तक में व्यवहृत है।2 शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा उपदेशित व अनुमोदित सम्पूर्ण बुद्धवचन को सात प्रकार से विभाजित किया जाता है। बुद्धवचन के सात विभाजनों में से कुछ विभाजन अत्यधिक प्राचीन है तथा वे पालि तिपिटक साहित्य के वर्तमान स्वरूप के निश्चित होने से पूर्वकाल के हैं। कालान्तर में इन्हें सम्पूर्ण बुद्धवचन ग्रन्थों के रूप में संकलित किया गया। बुद्धवचन के सात वर्गीकरणों में से कुछ विभाजन तो शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के समय में प्रचलित थे, लेकिन कुछ विभाजन उनके महापरिनिर्वाण के बाद अस्तित्व में आये। सम्पूर्ण बुद्धवचन के सातों विभागों को प्रकाशित करते हुए सुमंगलविलासिनी नामक ग्रन्थ के रचनाकार आचार्य बुद्धघोष कहते हैं कि एवमेतं सब्बं पि बुद्धवचनं रसवसेन एकविधं, धम्मविनयवसेन दुविधा, पठममज्झिमपच्छिमवसेन तिविधं तथा पिटकवसेन, निकायवसेन पंचविध, अंगवसेन नवविधं, धम्मक्खन्धवसेन चतुरासीतिविधं ति

वेदितब्बं।3 अर्थात् समस्त बुद्धवचन विमुक्ति रस प्रदान करने के कारण एक प्रकार का है; धम्म व विनय के अनुसार दो प्रकार का है; विनयपिटक, सुत्तपिटक, एवं अभिधम्मपिटक के अनुसार तीन प्रकार का है; प्रथम उपदेश, मध्यम उपदेश व अन्तिम उपदेश के अनुसार तीन प्रकार का है; दीघनिकाय, मज्झिमनिकाय, संयुत्तनिकाय, अंगुत्तरनिकाय व खुद्दकनिकाय के अनुसार पाँच प्रकार का है; सुत्त, गेय्य, वेय्याकरण, गाथा, उदान, इतिवुत्तक, जातक, अब्भुत-धम्म व वेदल्ल के अनुसार नौ प्रकार का है तथा धर्मस्कन्धों के अनुसार चैरासी हजार प्रकार का है। इसी प्रकार से गन्धवंस नामक ग्रन्थ के रचनाकार ने भी अपनी कृति में बुद्धवचन के सात विभाजनों में से पाँच प्रकार के वर्गीकरण का उल्लेख किया है।4 यह सर्वविदित है कि पालि तिपिटक साहित्य में संग्रहीत सद्धर्म अत्यधिक गम्भीर व दुरूह है। इसे प्रत्येक व्यक्ति आसानी से समझ नहीं सकता है। बुद्धवचन की इसी गम्भीरता व दुरूहता को दूर करने, एवं पालि तिपिटक साहित्य की भाषा को आसान व सरल बनाने हेतु मूल पालि तिपिटक साहित्य को आधार बनाकर इस पर भाष्य व व्याख्या के रूप में अट्ठकथा साहित्य की रचना की गयी। तदनन्तर अट्ठकथा साहित्य को भी और अधिक सरल बनाने के लिए टीका व अनुटीका साहित्य की रचना की गयी। पालि तिपिटक साहित्य, अनुपालि साहित्य, एवं अट्ठकथा साहित्य आदि का एक दूसरे से गहरा सम्बन्ध है। इसीलिए अन्य उपजीवी साहित्य को पालि तिपिटक साहित्य का विस्तृत रूप होने के साथ-साथ एक अभिन्न अंग भी है। पालि तिपिटक साहित्य के सरलीकरण की इसी परम्परा के कारण कालान्तर में अनुपालि साहित्य, अट्ठकथा साहित्य, टीका साहित्य, अनुटीका साहित्य, वंस साहित्य, काव्य साहित्य, व्याकरण साहित्य, अलंकार साहित्य (काव्य-शास्त्र), एवं छन्द साहित्य के रूप में पालि साहित्य (बौद्ध साहित्य) की वृद्धि सम्भव हो सकी है। पालि तिपिटक साहित्य की यही वृद्धि मानव जीवन के लिए अत्यधिक सार्थक सिद्ध हुई।

उदान का आशय

यह सर्वविदित है कि गम्भीर, शान्त, समाधियुक्त, सौमनस्ययुक्त व ज्ञानावस्था से परिपूर्ण वातावरण में शाक्यमुनि गौतम बुद्ध आदि आर्य पुद्गलों के श्रीमुख से निकले हृदयोद्गार ही उदान हैं, जिन्हें 'काव्य' के रूप में माना जा सकता है। उनके श्रीमुख से प्रस्रवित प्रथम-उदान से काव्य का आविर्भाव माना जा सकता है। अतः पालि काव्य साहित्य को समझने हेतु पालि साहित्य व परवर्ती बौद्ध साहित्य में वर्णित उदान को समझना अनिवार्य है। उदान शब्द के सम्बन्ध में ऐसा कहा जा सकता है कि किसी घटना को सुनने, देखने या अन्य किसी उपलब्धि के बाद हृदय से जो वचन अनायास् ही प्रस्रवित होते हैं, वे उदान कहे जाते हैं। प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द, खुशी एवं मुदिता-भावना से परिपूर्ण होकर सुखद् अवसरों पर किसी व्यक्ति के हृदय से अनायास् ही प्रस्रवित होने वाले वचन ही उदान होते हैं। उपलब्धि एवं सफलता से प्रादुर्भूत प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द, खुशी एवं उल्लास के भावों को छुपाने में असमर्थ होता है। इसीलिए प्रसन्नता का भाव व्यक्ति के मुख से अनायास् ही प्रस्रवित होता है, ऐसा वचन ही उदान कहा जा सकता है। प्रसन्नता के ऐसे भाव को ही उदान के रूप में परिभाषित करते हुए आचार्य बुद्धघोष कहते हैं कि एवमेव यं पीतिवचनं हृदयं गहेतुं न सक्कोति,

अधिकं हुत्वा अन्तो असण्ठहित्वा बहिनिक्खमति, तं 'उदानं' वुच्चति। एवरूपं पीतिमयं वचनं निच्छारेसी'ति अत्थो।।5 पालि अट्ठकथा-साहित्य में उदान को परिभाषित कर कहा गया है कि पीतिवेग समुट्ठापितो उदाहरो।6 अर्थात् प्रीतिवेग से समुत्थापित उद्गार ही उदान है।7 प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द, खुशी के क्षणों में सन्तों के श्रीमुख से अनायास् ही प्रस्रवित होने वाले उद्गारों को उदान के रूप में परिभाषित करते हुए उदान नामक ग्रन्थ के प्राक्कथन में भिक्षु जगदीश काश्यप कहते हैं कि भावातिरेक से कभी-कभी सन्तों के मुख से जो प्रीति-वाक्य निकला करते हैं, उसे उदान कहते हैं।8 व्यक्ति के अपने चित्त में प्रादुर्भूत आवेगों को छुपाने में असमर्थ होता है। मनोवेगों की अतिशयता के कारण व्यक्ति की वाणी के माध्यम से अनायास् ही निकलते हैं। ऐसे ही प्रीतिवचन, जो व्यक्ति के मुख से उद्गार के रूप में अनायास् ही प्रस्रवित होते हैं, ऐसे वचनों को ही उदान कहा जाता है। चित्त के ऐसे भाव को ही उदान के रूप में परिभाषित करते हुए आचार्य बुद्धघोष कहते हैं कि एवमेव यं पीतिवेगसमुट्ठापितं वितक्कविप्पफारं अन्तोहृदयं सन्धारेतुं न सक्कोति, सो अधिको हुत्वा अन्तो असण्ठहित्वा बहि वचीद्वारेन निक्खन्तो पटिग्गाहकनिरपेक्खो उदाहरविसेसो 'उदानं' न्ति वुच्चति। धम्मसंवेगवसेनपि अयमाकारो लब्भतेव।9 अर्थात् जिस प्रीतिवेग से समुत्थापित वितर्क-विस्फार को आन्तरिक हृदय सम्भाँल कर नहीं रख सकता और जो (प्रीतिवेग-समुत्थापित वितर्क-विस्फार) अधिक होकर, असंस्थित होकर बाहर वाणीद्वार से निकलता है और ग्रहण करने वाले की भी अपेक्षा नहीं रखता, वही उद्गार-विशेष उदान है।10 चित्त की प्रसन्नता की अवस्था में बुद्ध के श्रीमुख से अनायास् ही प्रस्रवित होने वाले वचन उदान होते हैं। बुद्ध के श्रीमुख से प्रस्रवित होने वाले ऐसे वचनों प्राणिमात्र के कल्याण का होना सन्निहित होती है। ज्ञानपूर्ण व कल्याणकारी वचनों के रूप में उदान को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि उदान का अर्थ है, बुद्ध-मुख से निकले भावमय प्रीति उद्गार या उध्र्व-वचन। ये उद्गार सौमनस्य की अवस्था में बुद्ध-मुख से निकली हुई ज्ञानमयिक गाथाओं के रूप में हैं।11 सौमनस्ययुक्त चित्त की अवस्था में हृदय से अनायास् ही प्रस्रवित होने वाली ज्ञानमयी वाणी को ही उदान कहलाती है। ज्ञानमयी वचनों से परिपूर्ण गाथापदों को उदान के रूप में परिभाषित करते हुए कहा गया है कि सोमनस्सञाणमयिकगाथापटिसंयुत्ता द्वेअसीति सुत्तन्ता 'उदानं'ति वेदितब्बं।12 सौमनस्ययुक्त चित्त से श्रीमुख से निकलने वाले प्रीति-वाक्यों को ही पालि-साहित्य में उदान के रूप में परिभाषित किया गया है। उदान का अर्थ है, प्रीति-वाक्य। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने विभिन्न अवसरों पर भावातिरेक से जो प्रीति-वाक्य कहे, वे ही उदान कहे जाते हैं।13 उदान का शब्दार्थ है, निःश्वास या उद्गार।14 भावातिरेक से जो प्रीति-वचन सन्तों के मुख से कभी-कभी निकला करते हैं, उसे उदान कहते हैं।15 अर्थात् जो वाक्य या पद रसात्मकता व गेयात्मकता से परिपूर्ण है, वह उदान की श्रेणी में रखा जा सकता है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध आदि साधु पुद्गलों के मुख से प्रादुर्भूत उदानरूपी गाथाएँ भी रसात्मकता व गेयात्मकता से ओतप्रोत हैं, जो पाठकों व श्रोताओं के चित्त में भावों का संचार करती हैं। बुद्धवचन में ऐसे वचन, जिनके माध्यम से हृदय के मनोभावों को अभिव्यक्त किया जाता है, वे उदान कहे जाते हैं।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2013

सारस्वरूप उदान के सम्बन्ध में ऐसा कहा जा सकता है कि सम्बोधि-प्राप्ति के बाद प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द एवं खुशी के सुअवसर पर सौमनस्ययुक्त चित्त से शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के श्रीमुख से अनायास् ही जो प्रीति-वाक्य निकले, ऐसे हृदयोद्गार ही उदान कहलाते हैं। गम्भीर, शान्त, समाधियुक्त, सौमनस्ययुक्त व ज्ञानावस्था से परिपूर्ण वातावरण में शाक्यमुनि गौतम बुद्ध आदि आर्य पुद्गलों के श्रीमुख से निकले हृदयोद्गार ही उदान हैं, जिन्हें 'काव्य' के रूप में माना जा सकता है। उनके श्रीमुख से प्रस्रवित प्रथम-उदान से काव्य का आविर्भाव माना जा सकता है। बुद्धवचन में उनके द्वारा भाषित व अनुमोदित वचनों में विद्यमान काव्यात्मकता के तत्वों को देखा जा सकता है, जिसकी परिणति कालान्तर में पालि काव्य साहित्य के रूप में हुई। उनके श्रीमुख से प्रस्रवित प्रथम-उदान के महत्व के सम्बन्ध में ऐसा कहा जा सकता है कि शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा प्रस्रवित प्रथम-उदान ही पालि तिपिटक साहित्य में काव्य के उद्भव का मूल हेतु है, जिसके विकास के विपाकस्वरूप ही पालि काव्य साहित्य का आविर्भाव सम्भव हो सका। अर्थात् कहा जा सकता है कि पालि तिपिटक साहित्य से ही पालि काव्य साहित्य का विकास हुआ है। उनके द्वारा प्रस्रवित प्रथम-उदान ही पालि साहित्य में काव्य के उद्भव का मूल हेतु है, जिसके विकास के विपाकस्वरूप ही पालि काव्य साहित्य का आविर्भाव सम्भव हो सका। सम्पूर्ण बुद्धवचन ही पालि तिपिटक साहित्य की आधारशिला है। सम्पूर्ण पालि तिपिटक साहित्य में काव्यात्मकता की झलक देखी जा सकती है; क्योंकि इसकी शुरुआत शाक्यमुनि गौतम बुद्ध की काव्यमयी वाणी से हुई है। सम्बोधि-प्राप्ति से लेकर महापरिनिर्वाण पूर्व तक के समयान्तराल में उनके द्वारा भाषित व अनुमोदित समस्त उपदेशों में काव्यमयी वाणी की झलक देखने को मिलती है। उन्होंने बुद्धशासन (पालि तिपिटक साहित्य) में प्रथम वचन के द्वारा काव्य की स्थापना की। उनके इस प्रथम वचन को पालि तिपिटक साहित्य में उदान के रूप में जाना जाता है। सम्बोधि-प्राप्ति के बाद शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने बोधि-वृक्ष के नीचे प्रीतिसुख का आनन्द लेते हुए अपनी उत्कृष्ट उपलब्धि को अभिव्यक्त करते हुए उदानस्वरूप तीन पालि गाथापदों को अपने श्रीमुख से प्रस्रवित किया, जिन्हें शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा उपदेशित सद्धर्म का प्रथम उदान कहा जाता है। प्रतीत्य-समुत्पाद धर्म की गम्भीरता व संसार की वास्तविकता का चिन्तन-मनन करते हुए अपने हृदयोद्गार को अभिव्यक्त करते हुये शाक्यमुनि गौतम बुद्ध कहते हैं कि -

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा, आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
अथस्स कंखा वपयन्ति सब्बा, यतो पजानाति सहेतु धम्मा' न्ति।।16

अर्थात् जब उत्साह सम्पन्न, ध्यानाभ्यासरत ब्राह्मण के मन में चिन्तन करते-करते ये (उपर्युक्त प्रतीत्य-समुत्पाद-युक्त) धर्म उद्भूत (प्रकट) हो जाते हैं, तब इन सहेतुक धर्मों का सम्यक् ज्ञान हो जाने के कारण, उस ज्ञानी ब्राह्मण की सभी आकांक्षाएँ (संसारिक तृष्णाएँ) शान्त हो जाती हैं।17

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा, आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
अथस्स कंखा वपयन्ति सब्बा, यतो खयं पच्चयानं अवेदी' ति।।18

अर्थात् जब उत्साही एवं ध्यानाभ्यासरत ब्राह्मण को मन में चिन्तन करते-करते ये (उपर्युक्त प्रतीत्य-समुत्पाद-युक्त) धर्म उद्भूत (प्रकट) हो जाते हैं, तब इन प्रत्यय (हेतु) ज्ञान के कारण उस ज्ञानी ब्राह्मण की सभी संासारिक आकांक्षाएँ क्षीण (शान्त) होने लगती हैं।19

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा, आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
विधूपयं तिट्ठति मारसेनं, सुरियो व ओभसयमन्तलिक्ख' न्ति।।20

अर्थात् जब उत्साही एवं ध्यानाभ्यासरत ब्राह्मण को मन में चिन्तन करते-करते ये (उपर्युक्त प्रतीत्य-समुत्पाद-युक्त) धर्म उद्भूत (प्रकट) हो जाते हैं, तो वह मारसेना को परास्त करता हुआ लोक में उसी तरह देदीप्यमान रहता है, जैसे कि आकाश में सूर्य आलोकित रहता है।21

श्रीलंका की धम्मपद-भाणक परम्परा के अनुसार शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के श्रीमुख से उद्भूत इन तीन गाथाओं के अलावा दो अन्य गाथाओं को भी 'प्रथम-उपदेश' के रूप में स्वीकार किया जाता है, जिन्हें भी 'प्रथम उदान' कहा जाता है। प्रतीत्य-समुत्पाद का अनुलोम व प्रतिलोम दृष्टि से चिन्तन-मनन करने के बाद शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने जन्ममरण परम्परा के मूल हेतुओं के रूप में अविद्या एवं तृष्णा को स्वीकार किया है। सम्बोधि-प्राप्ति के बाद सौमनस्ययुक्त चित्त से अपनी अभूतपूर्व उपलब्धि को काव्यात्मकता से परिपूर्ण भाषा में बहुत ही सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त करते हुए शाक्यमुनि गौतम बुद्ध कहते हैं कि -

अनेकजातिसंसारं सन्धाविस्सं अनिब्बिसं।
गहकारकं गवेसन्तो दुक्खा जाति पुनप्पुनं।।
गहकारक! दिट्ठोसि पुन गेहं न काहसि।
सब्बा ते फासुका भग्गा गहकूटं विसंखितं।
विसंखारगतं चित्तं तण्हानं खयमज्झगा।।22

अर्थात् बिना रुके हुऐ अनेक जन्मों तक संसार में दौड़ता रहा। (इस कायारूपी) कोठरी को बनाने वाले (गृहकारक) को खोजते पुनः पुनः दुःख (मय) जन्म में पड़ता रहा। हे गृहकारक! (अब) तुझे पहचान लिया, (अब) फिर तू घर नहीं बना सकेगा। तेरी सभी कड़ियां भग्न हो गयीं, गृह का शिखर बिखर गया। संस्काररहित चित्त से तृष्णा का क्षय हो गया।23

बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म को अभिव्यक्त करने के साथ-साथ पालि काव्य साहित्य में शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के जीवन-चरित्र को भी काव्यात्मक शैली के माध्यम से बहुत ही सुन्दर, रोचक व आकर्षक ढंग से प्रकाशित किया गया है। अतः पालि काव्य साहित्य की वण्र्य-सामग्री बुद्धवचन है। पालि तिपिटक साहित्य के अन्तर्गत खुद्दकपाठ, धम्मपद, उदान, इतिवुत्तक, सुत्तनिपात, विमानवत्थु, पेतवत्थु, थेरगाथा, थेरीगाथा, अपदान, एवं चरियापिटक आदि पालि ग्रन्थों में इसी काव्यात्मकता की भरपूर झलक देखी जा सकती है। पालि तिपिटक साहित्य गद्य-पद्य मिश्रित साहित्य है। इसमें रसात्मकता, गेयात्मकता व अलंकारिकता के तत्वों की उपस्थिति देखी जाती है, जिसके कारण ही पालि तिपिटक साहित्य में काव्यात्मकता की झलक देखी जा सकती है। इस प्रकार से पालि तिपिटक साहित्य के इन ग्रन्थों को प्रारम्भिक पालि काव्य साहित्य के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। प्रारम्भिक पालि काव्य साहित्य के विकास के कारण ही आधुनिक शुद्ध पालि काव्य साहित्य का अस्तित्व सम्भव हो सका है। पालि तिपिटक साहित्य में विद्यमान काव्यात्मकता का धीरे-धीरे विकास हुआ।

काव्यात्मकता के तत्वों को परवर्ती साहित्य ने एक गति प्रदान की। पालि काव्य साहित्य का विकास के क्रम व इतिहास को पालि तिपिटक साहित्य, अनुपिटक साहित्य, अट्ठकथा साहित्य, टीका साहित्य, अनुटीका साहित्य, वंस साहित्य, व्याकरण साहित्य, अलंकार साहित्य, एवं छन्द साहित्य आदि में वर्णित काव्यात्मकता को इनके ग्रन्थों में विद्यमान गाथा, उदान व इतिवुत्तक आदि की उपस्थिति के माध्यम से समझा जा सकता है।

बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म के अनुसार पालि तिपिटक साहित्य व परवर्ती साहित्य की ऐसी रचनाओं, जो रसात्मकता व अलंकारिक भाषा-शैली से परिपूर्ण हों, को 'काव्य' कहना उचित नहीं माना जाता है। काव्य-शास्त्र में वर्णित 'काव्य' के लक्षणों को आधार पर ऐसा कहा जा सकता है कि शब्द और अर्थयुक्त, रसात्मकता से युक्त, अलंकारिकता से युक्त, पददोष एवं वाक्यदोष से मुक्त, छन्द-योजना से युक्त, मधुर शब्दों से युक्त, शब्द-तत्व, अर्थ-तत्व, भाव-तत्व, कल्पना-तत्व एवं बुद्धि-तत्व से युक्त, गेयात्मकता से युक्त तथा प्रसन्नता एवं आनन्द से युक्त रचना से युक्त रचना ही 'काव्य' होती है।

पालि तिपिटक साहित्य में वर्णित सामग्री के कारण ही पालि काव्य साहित्य का आविर्भाव सम्भव हो सका है। पालि आचार्यों व कवियों ने पालि तिपिटक साहित्य में वर्णित सामग्री को आधार मानकर काव्य-ग्रन्थों की रचना करके पालि काव्य साहित्य के विकास में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। पालि आचार्यों व कवियों ने मुख्य रूप से शाक्यमुनि गौतम बुद्ध की जीवनी को आधार मानकर पालि काव्य-ग्रन्थों की रचना की। पालि काव्य साहित्य में विरचित काव्य-ग्रन्थों को शब्दार्थ, अलंकारिकता, रसात्मकता, गेयात्मकता, लयात्मकता, छन्दोबद्ध, शब्द-तत्व, अर्थ-तत्व, भाव-तत्व, कल्पना-तत्व और बुद्धि-तत्व से युक्त, पददोष एवं वाक्यदोष से मुक्त तथा प्रसन्नता, आनन्द एवं सुख-शान्ति प्रदान करने वाली भाषा-शैली एवं सामग्री से परिपूर्ण माना जा सकता है।

पालि काव्य साहित्य के आविर्भाव का मूलाधार पालि तिपिटक साहित्य ही है। पालि काव्य साहित्य के अन्तर्गत उन्हीं काव्य-ग्रन्थों को रखा गया है, जो दसवीं सदी से लेकर आधुनिक काल तक पालि भाषा में रचित पद्य या गद्य मिश्रित पद्य रचनाएँ हंै। प्रायः लोग यह कह देते हैं कि बुद्धवचन तो नीरस है, जो केवल साधु-सन्त व वैरागियों की ही विषयवस्तु है, जो एक असत्य दृष्टिकोण है। पालि तिपिटक साहित्य में भी रस का उपादान है, जिसके कारण ही पालि काव्य-ग्रन्थों का सृजन सम्भव हो सका है। पालि काव्य साहित्य के अन्तर्गत मुख्य रूप से वर्णनात्मक काव्य व काव्य-आख्यान के रूप में विरचित पालि काव्य-ग्रन्थ देखने को मिलते हैं। पालि तिपिटक साहित्य में वर्णित सामग्री व शाक्यमुनि गौतम बुद्ध की जीवनी को आधार मानकर पालि आचार्यों व कवियों ने पालि काव्य-ग्रन्थों के रूप में एक विपुल साहित्य का सृजन किया, जिसके परिणामस्वरूप पालि काव्य साहित्य को एक विशेष गति मिल सकी। पालि आचार्यों व कवियों द्वारा विरचित काव्य-ग्रन्थों का सतत् प्रवाह अभी भी जारी है, जिसके कारण ही पालि काव्य साहित्य के अन्तर्गत विरचित पालि काव्य-ग्रन्थों की संख्या में दिनोंदिन वृद्धि होती जा रही है। पालि काव्य साहित्य एवं साहित्यकार पालि काव्य साहित्य एक विस्तृत व महत्वपूर्ण

साहित्य कहा जा सकता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार पालि काव्य साहित्य के अन्तर्गत कुल ब्यालीस काव्य-ग्रन्थों का नाम लिया जा सकता है। इन ग्रन्थों को आचार्य भदन्त रट्ठपाल थेर द्वारा विरचित सहस्सवत्थुप्पकरण (सहस्सवत्थु-अट्ठकथा), आचार्य भदन्त कस्सप थेर द्वारा विरचित अनागतवंस, आचार्य भदन्त धम्मनन्दी थेर द्वारा विरचित सिंहलवत्थुकथा, आचार्य भदन्त बुद्धरक्खित थेर द्वारा विरचित जिनालंकार, आचार्य भदन्त वनरतन मेधंकर थेर द्वारा विरचित जिनचरित, आचार्य भदन्त आनन्द महाथेर द्वारा विरचित सद्धम्मोपायन, आचार्य भदन्त बुद्धप्पिय थेर द्वारा विरचित पज्जमधु, आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर द्वारा विरचित तेलकटाहगाथा, आचार्य भदन्त वेदेह थेर द्वारा विरचित रसवाहिनी (मधुरसवाहिनी या मधुररसवाहिनी), आचार्य भदन्त वनरतन आनन्द महाथेर द्वारा विरचित उपासकजनालंकार, आचार्य भदन्त सिद्धत्थ थेर द्वारा विरचित सारत्थसंगह (सारसंगह), आचार्य सिरि धम्मराजा क्यच्वा द्वारा विरचित सद्दबिन्दु, आचार्य भदन्त मेधंकर थेर द्वारा विरचित लोकदीपसार (लोकप्पदीपसार), अज्ञात रचनाकार द्वारा विरचित पञ्चगतिदीपन, आचार्य भदन्त रट्ठसार थेर द्वारा विरचित भूरिदत्त-जातक, हत्थिपाल-जातक एवं संवर-जातक, आचार्य भदन्त तिपिटिकालंकार थेर द्वारा विरचित वेस्सन्तर-जातक, आचार्य भदन्त सीलवंस थेर द्वारा विरचित बुद्धालंकार, आचार्य सिरि गतारा उपतपस्सी द्वारा विरचित वुत्तमालासन्देससतकं, अज्ञात रचनाकार द्वारा विरचित कायविरतिगाथा, आचार्य भदन्त ञाणाभिवंस महाथेर द्वारा विरचित राजाधिराजविलासिनी, आचार्य भदन्त ञाणाभिवंस महाथेर द्वारा विरचित चतुसामणेरवत्थु, राजोवादवत्थु एवं तिगुम्बथोमण, अज्ञात रचनाकार द्वारा विरचित मालालंकारवत्थु, आचार्य सरणंकर संघराज द्वारा विरचित अभिसम्बोधिलंकार, आचार्य गिनेगथ द्वारा विरचित तिरतनमाला, आचार्य भदन्त विमलसार-तिस्स थेर द्वारा विरचित सासनवंसदीप, आचार्य भदन्त धम्मकित्ति थेर 'संघराज' द्वारा विरचित पारमीमहासतक (पारमीसतक), आचार्य छक्किन्दाभिसिरि द्वारा विरचित लोकनीति, अज्ञात रचनाकार द्वारा विरचित रतनपञ्जर, अज्ञात रचनाकार द्वारा विरचित नमक्कार, आचार्य भदन्त सिद्धत्थ धम्मानन्द थेर द्वारा विरचित लोकोपकार, आचार्य रतनजोति (मातले) द्वारा विरचित सुमंगलचरित, आचार्य धम्माराम (यक्कडुव) द्वारा विरचित धम्मारामसाधुचरित, आचार्य जिनवंस (मिगमुवे) द्वारा विरचित भत्तिमालिनी, आचार्य भदन्त विदुरुपोल पियतिस्स थेर द्वारा विरचित कमलाञ्जलि, आचार्य भदन्त विदुरुपोल पियतिस्स थेर महाकस्सपचरित, आचार्य भदन्त विदुरुपोल पियतिस्स थेर महानेक्खम्मचम्पू, आचार्य भदन्त मोरटुवे मेघानन्द थेर द्वारा विरचित जिनवंसदीपनी (जिनवंसदीप) तथा आचार्य भदन्त सुमंगल (गोवुस्स) थेर द्वारा विरचित मुनिन्दापदान के नाम से जाना जा सकता है। यह सर्वविदित है कि पालि काव्य साहित्य की रचना का मूल आधार पालि तिपिटक साहित्य ही रहा है। पालि काव्य साहित्य की वर्ण्य-सामग्री बुद्धवचन है। बुद्धवचन की विषयवस्तु के रूप में बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म को अभिव्यक्त करने के साथ-साथ पालि काव्य साहित्य ने शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के जीवन-चरित्र को भी काव्यात्मक शैली के माध्यम से बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रकाशित किया है, जो पालि काव्य साहित्य की एक

महत्वपूर्ण विशिष्टता है। पालि तिपिटक साहित्य में सम्बोधि-प्राप्ति से लेकर महापरिनिर्वाण तक के काल में शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा उपदेशित व अनुमोदित वाणी को ही मूल रूप से प्रकाशित किया गया है। प्रारम्भिक काव्य साहित्य में उनके बाल्यकाल की चर्चा बहुत ही कम मात्रा में देखने को मिलती है, लेकिन आधुनिक पालि काव्य साहित्य में उनके बाल्यकाल से लेकर महापरिनिर्वाण काल तक की अवधि की घटनाओं तथा उनके द्वारा उपदेशित धर्म को बहुत ही सुन्दर व आकर्षक ढंग से प्रकाशित किया गया है। आधुनिक पालि काव्य साहित्य ने अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से विश्व साहित्य को अमूल्य निधि प्रदान की है। आधुनिक पालि काव्य साहित्य ने धर्म-दर्शन के साथ-साथ विश्व की सामाजिक, राजनीतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक व साहित्यिक वातावरण को भी प्रकाशित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसीलिए आधुनिक पालि काव्य साहित्य न केवल मानव जाति, अपितु प्राणिमात्र के लिए एक प्रेरणास्रोत है। इसी आधुनिक पालि काव्य साहित्य की एक महत्वपूर्ण शृंखला में सासनवंसदीप 24 नामक ग्रन्थ का नाम अग्रणी है। सासनवंसदीप नामक ग्रन्थ को पालि काव्य-साहित्य की एक अद्वितीय व श्रेष्ठ काव्य-कृति के रूप में माना जाता है। इस ग्रन्थ के नामकरण पर गम्भीरता से चिन्तन करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि ग्रन्थ में शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के जीवन-चरित्र के साथ-साथ बौद्ध धर्म के इतिहास को क्रमबद्ध शैली में काव्यमयी गाथाओं के माध्यम से बहुत ही सुन्दर व आकर्षक ढंग से प्रकाशित किया गया है, जिसके कारण ही इस ग्रन्थ का नाम सासनवंसदीप रखा गया है। ग्रन्थ में वर्णित विषयवस्तु के आधार पर ग्रन्थ का नामकरण उचित व तार्किक प्रतीत होता है। सासनवंसदीप नामक ग्रन्थ के रचनाकार आचार्य भदन्त विमलसार-तिस्स थेर25 माने जाते हैं, जिन्हें आचार्य विमलसार थेर 26 भी कहा जाता है। आचार्य भदन्त विमलसार-तिस्स थेर ने स्वयं को इस ग्रन्थ का रचनाकार बतलाते हुए अपने आपको आचारिय विमलसारत्थेर27 नाम से सम्बोधित किया है।

सासनवंसदीप ग्रन्थ

आचार्य भदन्त विमलसार-तिस्स थेर ने श्रीलंका देश में सासनवंसदीप नामक ग्रन्थ की रचना उन्नीसवीं शताब्दी में की है। इसके रचनाकाल के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि सासनवंसदीप नामक ग्रन्थ आचार्य भदन्त विमलसार-तिस्स थेर द्वारा उन्नीसवीं शताब्दी में विरचित एक श्रेष्ठ पालि काव्य-ग्रन्थ है, जो पालि काव्य-साहित्य की एक अमूल्य निधि है। आचार्य भदन्त विमलसार-तिस्स थेर द्वारा विरचित सासनवंसदीप नामक ग्रन्थ के नामकरण से ही ग्रन्थ में वर्णित विषयवस्तु की झलक मिल जाती है। आचार्य भदन्त विमलसार-तिस्स थेर ने सासनवंसदीप नामक ग्रन्थ में शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के जीवन-चरित्र के साथ-साथ बौद्ध धर्म के इतिहास को क्रमबद्ध शैली में काव्यमयी गाथाओं के माध्यम से विस्तार से बहुत ही सुन्दर व आकर्षक ढंग से प्रकाशित किया गया है। कवि ने ग्रन्थ की सम्पूर्ण सामग्री को एक हजार छह सौ एकहत्तर गाथाओं28 के माध्यम से बहुत ही सुन्दर व आकर्षक ढंग से प्रकाशित किया है। कवि ने ग्रन्थ में वर्णित एक हजार छह सौ एकहत्तर गाथाओं को बारह अधिकारों29 (परिच्छेदों) में विभक्त करके प्रकाशित किया है, जिनके सम्बन्ध

में संक्षेप में निम्न प्रकार से समझा जा सकता है -

आचार्य भदन्त विमलसार-तिस्स थेर ने सासनवंसदीप नामक ग्रन्थ के प्रथम अधिकार में सुमेध बोधिसत्व के रूप में बोधिसत्व के जीवन से लेकर तुषित देवलोक में उत्पन्न होने की घटना का वर्णन किया गया है। ग्रन्थ के द्वितीय अधिकार में सिद्धार्थ बोधिसत्व के जन्म से लेकर उनके महाभिनिष्क्रमण तक की घटनाओं का वर्णन किया गया है। ग्रन्थ के तृतीय अधिकार में अनोमा नदी के किनारे पर सिद्धार्थ बोधिसत्व के पहुँचने की घटना से लेकर क्रमशः उनकी तपश्चर्या, मार-विजय, सम्बोधि-प्राप्ति, उसके बाद के सात सप्ताह, धर्मचक्रप्रर्वतन, यश-प्रव्रज्या, सहस्र जटिल-प्रव्रज्या, अग्रश्रावक-प्रव्रज्या, कपिलवस्तु में प्रवेश, राहुल कुमार-प्रव्रज्या एवं शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के आयुसंस्कार के उत्सर्जन या परित्याग आदि घटनाओं का वर्णन किया गया है। ग्रन्थ के चतुर्थ अधिकार में जेतवन महाविहार में प्रवेश, सारिपुत्त व महामोग्गल्लान का परिनिर्वाण, शाक्यमुनि गौतम बुद्ध का महापरिनिर्वाण एवं स्तूप के निर्माण आदि घटनाओं का वर्णन किया गया है। ग्रन्थ के पाँचवें अधिकार में प्रथम धर्म-संगीति की घटना का वर्णन किया गया है। ग्रन्थ के छठवें अधिकार में द्वितीय धर्म-संगीति की घटना का वर्णन किया गया है। ग्रन्थ के सातवें अधिकार में तृतीय धर्म-संगीति की घटना का वर्णन किया गया है। ग्रन्थ के आठवें अधिकार में कश्मीर-गान्धार, वनवासी-राष्ट्र, अपरान्त-राष्ट्र, महाराष्ट्र व यवनक-राष्ट्र आदि में बुद्धशासन के प्रचार की घटनाओं का वर्णन किया गया है। ग्रन्थ के नौवें अधिकार में श्रीलंका देश में बुद्धशासन (बौद्ध धर्म) की स्थापना की घटना का वर्णन किया गया है। ग्रन्थ के दसवें अधिकार में राजा देवानाम्पिय-तिस्स और भदन्त महामहेन्द्र थेर के परिनिर्वाण एवं श्रीलंका देश में पालि तिपिटक साहित्य के लिपिबद्ध होना आदि घटनाओं का वर्णन किया गया है। ग्रन्थ के ग्यारहवें अधिकार में आचार्य भदन्त बुद्धघोष के द्वारा श्रीलंका देश में उपलब्ध अट्ठकथा-साहित्य का मागधी-भाषा (पालि-भाषा) में अनुवाद किये जाने की घटना व विभिन्न आचार्यों द्वारा विरचित पालि ग्रन्थों के नामों का उल्लेख उनके रचनाकारों के साथ किया गया है, जो पालि व बौद्ध साहित्य के इतिहास के लिए अति महत्वपूर्ण है। ग्रन्थ के बारहवें अधिकार में सासनपतिट्ठापनादिकथा को प्रकाशित किया गया है। इसके साथ ही श्रीलंका देश में 'असिग्गह सिलामेघ' के समय से लेकर 'अमरपुर निकाय' की शासन प्रतिष्ठा तक संघ की 'सोधपनादिकथा' के माध्यम से संघ में होने वाले संशोधनों एवं सुधारों को भी प्रकाशित किया गया है।

आचार्य भदन्त विमलसार-तिस्स थेर ने सासनवंसदीप नामक ग्रन्थ में वर्णित सामग्री को काव्यात्मकता से परिपूर्ण अलंकारिक भाषा-शैली से बहुत ही सुन्दर व आकर्षक ढंग से प्रकाशित किया गया है, जिसमें वह पूर्णतः सफल हुआ प्रतीत होता है। इस प्रकार से विषयवस्तु की दृष्टि से सासनवंसदीप नामक ग्रन्थ को एक उत्तम व श्रेष्ठ पालि काव्य-ग्रन्थ कहा जा सकता है। ग्रन्थ में वर्णित विषयवस्तु के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि सासनवंसदीप नामक ग्रन्थ एक ऐसा संकलन है, जिसमें शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के जीवन-चरित्र के साथ-साथ बौद्ध धर्म के इतिहास को रसात्मकता व अलंकारिकता से परिपूर्ण एक हजार छह सौ एकहत्तर गाथाओं को बारह

अधिकारों में विभक्त करके प्रकाशित किया गया हो।

आचार्य भदन्त विमलसार-तिस्स थेर ने सासनवंसदीप नामक ग्रन्थ की विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण में शान्त-रस व वीर-रस का प्रयोग किया है, जिसके द्वारा यह ग्रन्थ बहुत ही रोचक, सुन्दर व आकर्षक बन गया है। इस प्रकार से इस ग्रन्थ में रसात्मकता की उपस्थिति देखी जा सकती है। इसके साथ-साथ ग्रन्थ में प्रयुक्त भाषा-शैली में अलंकारिकता भी विद्यमान है। कवि ने ग्रन्थ में जिस भाषा-शैली का प्रयोग किया है, उस पर पालि तिपिटक साहित्य व अट्ठकथा-साहित्य का प्रभाव परिलक्षित है। कवि द्वारा सासनवंसदीप नामक ग्रन्थ में प्रयुक्त भाषा-शैली ग्रन्थ की सामग्री के अनुकूल प्रतीत होती है। आचार्य भदन्त विमलसार-तिस्स थेर द्वारा विरचित सासनवंसदीप नामक ग्रन्थ पालि काव्य-साहित्य की अत्यधिक महत्वपूर्ण काव्य-कृति है। यह ग्रन्थ धार्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक व साहित्यिक दृष्टि से एक उत्तम पालि काव्य-ग्रन्थ कहा जा सकता है। सासनवंसदीप नामक ग्रन्थ में पालि तिपिटक साहित्य व बौद्ध धर्म के इतिहास को प्रकाशित करने के कारण यह काव्य-रचना होते हुए भी गन्धवंस30, सासनवंस31 व सद्धम्मसंगह32 जैसे ग्रन्थों के समान ही अति महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

अतः सारस्वरूप ऐसा कहा जा सकता है कि आचार्य भदन्त विमलसार-तिस्स थेर द्वारा विरचित सासनवंसदीप नामक ग्रन्थ पालि काव्य-साहित्य की एक श्रेष्ठ काव्य-कृति है। यह ग्रन्थ सारगर्भित विषयवस्तु से परिपूर्ण धार्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक व साहित्यिक दृष्टि से एक उत्कृष्ट पालि काव्य-ग्रन्थ है, जिसकी रचना उन्नीसवीं शताब्दी में की गयी है।

सन्दर्भ-सूची

1. साधुविलासिनी (सीलक्खन्धवग्ग-अभिनवटीका) (रचयिता) महाथेरो ञाणाभिवंस-धम्मसेनापति, इगतपुरीः विपश्यना विशोधन विन्यास, 1993, पृ.26
2. बौद्ध धर्म-दर्शन तथा साहित्य, भिक्षु धर्मरक्षित, वाराणसीः नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, 1943, पृ.90
3. सुमंगलविलासिनी पठमो भागो (दीघनिकाय-अट्ठकथा) (संशोधक) महेश तिवारी शास्त्री, नालन्दाः नव नालन्दा महाविहार, 1974, पृ.21
4. सब्बं पि बुद्धवचनं, विमुत्तिरसहेतुकं। होति एकं विधं येव, तिविधं पिटकेन च। तं च सब्बं पि केवलं, पंचविधं निकायतो। अंगतो च नवविधं, धम्मक्खन्धगणनतो। चतुरासीतिसहस्सधम्मखन्धप्पभेदनं ति। गन्धवंसो (सम्पादक) बिमलेन्द्र कुमार, दिल्लीः ईस्टर्न बुक लिंकर्स, 1992, पृ.1
5. सुमंगलविलासिनी पठमो भागो (दीघनिकाय-अट्ठकथा), वही, पृ.160
6. परमत्थदीपनी (उदान-अट्ठकथा), इगतपुरीः विपश्यना विशोधन विन्यास, 1995, पृ.2
7. भरत-सिंह उपाध्याय, पालि-साहित्य का इतिहास, प्रयागः हिन्दी साहित्य सम्मेलन, 2000, पृ.280
8. भरत-सिंह उपाध्याय, पालि-साहित्य का इतिहास, प्रयागः हिन्दी साहित्य सम्मेलन, 1972, पृ.250
9. परमत्थदीपनी (उदान-अट्ठकथा), वही, पृ.3
10. भरत-सिंह उपाध्याय, पालि-साहित्य का इतिहास, वही, 2000, पृ.280
11. भरत-सिंह उपाध्याय, पालि-साहित्य का इतिहास, वही, 1972, पृ.114
12. सद्धम्मसंगहो (संशोधक) एस्. मुखर्जी एवं महेश तिवारी, नालन्दाः नव नालन्दा महाविहार, 1961, पृ.8
13. रामानन्द शर्मा, पालिः भाषा एवं साहित्य, गाजियाबादः पचैरी प्रकाशन, 1998, पृ.129

14. इन्द्रचन्द्र शास्त्री, पालि भाषा और साहित्य, दिल्लीः हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1987, पृ.320
15. बलदेव उपाध्याय, बौद्ध-दर्शन-मीमांसा, वाराणसीः चैखम्भा विद्याभवन प्रकाशन, 1999, पृ.8
16. उदानपालि, इगतपुरीः विपश्यना विशोधन विन्यास, 1995, पृ.70
17. महावग्गपालि (अनुवादक एवं सम्पादक) स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, वाराणसीः बौद्ध-भारती, 1998, पृ.4
18. उदानपालि, वही, पृ.70
19. महावग्गपालि, वही, पृ.4
20. उदानपालि, वही, पृ.71
21. महावग्गपालि, वही, पृ.5
22. धम्मपद (अनुवादक) राहुल सांकृत्यायन, लखनऊः बुद्ध विहार, रिसालदार पार्क, 1986. पृ.70
23. वही
24. सासनवंसदीप नामक काव्य-ग्रन्थ का सिंहली भाषा का प्रथम संस्करण सन् 1880 में श्रीलंका देश के कोलम्बो से प्रकाशित हुआ। इसके बाद पुनः सन् 1929 में इस ग्रन्थ का सिंहली भाषा में दूसरा संस्करण भी प्रकाशित किया गया है। कुछ विद्वानों ने इस ग्रन्थ को वंस साहित्य की श्रेणी में भी रखा है। भरत-सिंह उपाध्याय, पालि-साहित्य का इतिहास, वही, 2000, पृ.719
25. वही
26. वही
27. वही
28. वही
29. वही
30. गन्धवंसो, वही, पृ.1
31. सासनवंसो (संशोधक) चन्द्रिका सिंह उपासक, नालन्दाः नव नालन्दा महाविहार, 1961, पृ.1
32. सद्धम्मसंगहो, वही, पृ.1